सांख्य दर्शन — महर्षि कपिल — सांख्य सूत्र, तत्व समास

ज्ञानमीमांसा
प्रत्यक्ष + अनुमान + शब्द

(1) सत्कार्यवाद

→ कार्यकारणवाद के अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई कारण अवश्य होना चाहिए क्योंकि बिना कारण के कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता।

→ कारणवाद का मूल प्रश्न है - क्या कार्य, उत्पत्ति के पूर्व भी, अपने कारण में विद्यमान रहता है अथवा नहीं?

→ इस सम्बन्ध में दो मत सामने आते हैं

(1) सत्कार्यवाद - इनका मत है कार्य अपने उत्पत्ति के पूर्व कारण में अव्यक्त रूप में विद्यमान रहता है।

(2) असत्कार्यवाद - इसके अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व असत है। अर्थात अपने कारण में विद्यमान नहीं है। इस मत को 'आरम्भवाद' भी कहा जाता है।

समर्थक! —

असत्कार्यवाद के समर्थकों में — न्याय-वैशेषिक
हीनयान बौद्ध
कुछ मीमांसक

→ हीनयान बौद्ध - अनित्यपरमाणुकारणवाद या क्षणिकवादी है

NET → वैशेषिक, नैयायिक कुछ मीमांसक — नित्यपरमाणुकारणवादी है।

NET → असत्कार्यवाद के अनुसार — कार्य एक नूतन कृति है, एक नवीन सृष्टि है।

→ सत्कार्यवाद के अनुसार — कार्य कारण में पहले से निहित रहता है कार्य उत्पत्ति के पूर्व भी सत् है कार्य कारण में अव्यक्त रूप में विद्यमान है कार्य नई सृष्टि नहीं है।

→ सत्कार्यवाद के दो रूप होते हैं —

(1) परिणामवाद — सांख्य, योग, विशिष्टाद्वैत
(2) विवर्तवाद — शंकर, शून्यवाद (शून्यता-विवर्तवाद)

परिणामवाद — का अर्थ है : कार्य की उत्पत्ति का अर्थ है कारण का कार्य में रूपान्तरण।
Ex — दूध का परिणाम दही है। यहाँ दूध और दही दोनों सत् हैं।

→ परिणामवाद के दो रूप हो जाते हैं —
(a) प्रकृतिपरिणामवाद — सांख्य योग
(b) ब्रह्मपरिणामवाद — विशिष्टाद्वैत (रामानुज)

विवर्तवाद — कारण का कार्य में रूपान्तरण या विवर्त वास्तविक नहीं आभास मात्र है। जैसे ब्रह्म का नाना रूप में रूपान्तरण नहीं आभास मात्र होता है।

कारणता
- सत्कार्यवाद
  - परिणामवाद
    - प्रकृति परिणामवाद (सांख्य+योग)
    - ब्रह्मपरिणामवाद (रामानुज)
  - विवर्तवाद
    - शून्यता विवर्तवाद
    - विज्ञान विवर्तवाद
    - ब्रह्म विवर्तवाद
- असत्कार्यवाद / आरम्भवाद

चार्वाक - स्वभाववाद
बौद्ध - हीनयान - असत्कार्यवाद
बौद्ध - महायान -
जैन -
न्याय
मीमांसा < कुमारिल - सद् सत् / भट्ट
वैशेषिक - असत्कार्यवाद
अद्वैत वेदान्त
विशिष्टाद्वैत
सांख्य योग

→ जैन मत + आचार्य कुमारिल का मीमांसा सम्प्रदाय — सदसत्कार्यवाद को मानते हैं।

→ सदसत्कार्यवाद के अनुसार — कार्य, उत्पत्ति के पूर्व, अव्यक्त रूप में कारण से अभिन्न होने से 'सत्' है तथा व्यक्त रूप में न होने से 'असत्' भी है।

→ स्वभाववाद — चार्वाक कारणता को नहीं मानते हैं। उनके अनुसार जगत और उसका वैचित्र्य कारणजन्य नहीं होकर स्वभावजन्य है। अतः चार्वाक का मत स्वभाववाद कहलाता है।

* सांख्य सत्कार्यवाद के समर्थन में ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका का श्लोक संख्या नौ प्रमाणरूप देते हैं —

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥ 9

(2) પ્રકૃતિ और उसके परिणाम

→ सांख्य 'द्वैतवादी' दर्शन है, जिसके मूल में दो 'सत्ता' है —
(1) प्रकृति / जड़
(2) पुरुष / चेतन

→ प्रकृति समस्त जड़ जगत की जननी है।
प्रकृति को अन्य नाम से पुकारा गया है —
अजन्मा, मूल प्रकृति, प्रधान, अव्यक्त, अनुमान, विवेकशून्य, नित्य, एक, व्यापक, पुरुष आश्रय है।

→ प्रकृति त्रिगुणात्मक होते है। अर्थात इसमें तीन गुण है —
1. सत्व गुण — सुख उत्पन्न करने वाला प्रकाश का प्रतीक उजला
2. रजस् गुण — दुःख " " " अशुद्ध " लाल
3. तमस् गुण — मोह " " " अंधकार " काला

→ प्रकृति के अस्तित्व के प्रमाणस्वरूप ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका का श्लोक 15 प्रस्तुत किया गया है: —

भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागात् अविभागाद् वैश्वरूप्यस्य ॥15

→ प्रकृति में दो प्रकार के परिवर्तन होते है —
(1) स्वरूप परिवर्तन — यह परिवर्तन विनाश / प्रलय के समय ही होता है। जब प्रकृति शान्त अवस्था में रहती है तब स्वरूप परिवर्तन होता है। इसमें सभी गुण अपने अपने वर्ग के गुण में जाकर विलय जाते है।
(2) विरूप परिवर्तन — सृष्टि या विकास के समय यह परिवर्तन होता है। जब एक वर्ग के गुण का तथा दूसरे वर्ग के गुण में होता है।